IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सहरसा जिले में यातायात एवं परिवहन के साधनों का विकासरू एक भौगोलिक अध्ययन

1. DR. SHAMBHU KUMAR 2. VIKAS KUMAR 3.SUNANDA

Research Scholar 4. USHA KUMARI SHARMA

Department of Geography 5. MURARI RAY

B.R.A Bihar University Muzaffarpur 6. RISHAV KUMAR, 7. AJIT RAM

Abstract सहरसा जिला रेल और सड़क परिवहन से जुड़ा हुआ है। परन्तु इसके सभी प्रखंड रेल परिवहन सुविधा से वंचित है। वायु परिवहन सहरसा जिला को सेवा प्रदान करता है। जल परिवहन की दूरगामी सुविधा नहीं है परन्तु स्थानीय सुविधा के लिए नाव चलायी जाती है। सहरसा जिला की आबादी बढ़ने से सर्वाधिक प्रभाव रेल और बस परिवहन पर पड़ा है। रेलवे और बस स्टैंड में भीड–भाड़ की समस्या, ट्रैफिक जाम की समस्या से यह ज्ञात होता है कि मार्गो पर ओबरब्रिज निमार्ण की आवष्यकता महसूस की जा रही है, ताकि परिवहन कार्य सुचारू ढंग से चलती रहे। वाहनों की लम्बी कतारें नहीं लगें। भीड़–भाड़ में दुर्घटना की आशंका बनी रहती है। अतः सड़कों की चौड़ीकरण, दोहरे सड़क, ओबरब्रिज निकालने की जरूरत है। आज सरकरी तंत्र ट्रैफिक जाम की समस्या पर काबू पाने के लिए विवश है। ट्रैफिक लाईट का उलंघन हो रहा है। जनता को जाम की स्थिति में घुम–घुमावदार मार्ग होकर जाना पड़ता है। जिससे समय और उर्जा की अधिक खपत होती है। दूसरी ओर बाढ़ के कारण सहरसा के सड़कों की स्थिति जर्जर हैं यहाँ की टूटी सड़कें तीव्र गति से वाहन चलाने लायक नहीं है। नगरों के भीतर यातायात–परिवहन सुविधा को सुगम बनाने के लिए नगर सब सेवा शुरू की गयी है। फिर भी बढ़ती हुई नगरीय आबादी कि तुलना में वाहनों की कमी से भीड़–भार बढ़ी है। प्रतिवर्ष सड़क की मरम्मती होती रहे ताकि उर्जा की खपत कम हो, समय की बचत हो, दुर्घटना में कमी हो, गाड़ियों पर चालक का नियंत्रण हो। रेल सुविधा को विद्युतीकृत, दोहरे लाईन करने की जरूरत है। इन सारी समस्याओं का निदान कर यातायात परिवहन सुविधा को चुस्त–दुरूस्त बनाया जा सकता है। संचार सुविधाओं को विकसित कर हरक्षेत्र की जानकारी रखी जा सकती है।

Keywords- सड़क परिवहन, रेल परिवहन, जल परिवहन

अध्ययन क्षेत्र

यातायात–परिवहन और संचार के साधन किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास में गति प्रदान करते हैं। आज दुनिया नेटवर्किंग का है। मोबाइल से बात करना और व्यापार शुरू, सिर्फ द्रुतगामि साधन, अच्छी सड़क, रेलमार्ग इत्यादि होनी चाहिए। यह वर्तमान समय में 'स्नायुतंत्र' की तरह है जो दौड़ रही है। दूरी और समय अच्छे यातायात के साधनों द्वारा घट जाता है। जो क्षेत्र यातायात और परिवहन की अच्छी व्यवस्था रखता है उस क्षेत्र की दूरी अधिक होने पर भी समय कम लगता है। लेकिन यातायात की व्यवस्था अच्छी नहीं होने पर नजदीक जाने में भी धन और समय का अपव्यय होता है। सहरसा जिले में यातायात–परिवहन के चार मुख्य साधन है।

1. **सड़क परिवहनः–** स्थलीय मार्गों में सड़क सबसे सुगम, यातायात और परिवहन के साधन है जो जाल की तरह एक–दूसरे से जुड़ा हुआ है। सड़क पाँच तरह की होती है– राष्ट्रीय, प्रादेशिक, जिला, स्थानीय और ग्रामीण सड़क। कटिहार–पूर्णिया होते हुए राष्ट्रीय राज्यमार्ग–31 गुजरी है। उसी से जुड़ी प्रादेशिक राजमार्ग और जिला सड़क से सहरसा क्षेत्र जुड़ी हुई है। जिले के प्रत्येक प्रखंड या तो उपरोक्त राजमार्ग के किनारे हैं या स्थानीय तथा ग्राम सड़क द्वारा जिला मुख्यालय से जुड़ी है। ऐसा कोई भी प्रखंड नहीं है जहाँ सड़क न गया हो। कोई गाँव नहीं है जहाँ सड़क न हो। आज सभी गाँव की सड़कें सोंलिंग, ढलुआ, पक्की कर दी गयी है। जो मुख्य मार्ग से जुड़ी है। कच्ची सड़क बहुत कम देखने को मिलती है। परन्तु सहरसा का बाढ़ग्रस्त इलाका सड़क को अधिक क्षतिग्रस्त करता है और सरकारी वित्त के अभाव में मरम्मत नहीं हो पाता है। इसके सुदूर देहात में आज भी यातायात परिवहन की दिक्कत है। लोग पैदल या घोड़े, या घोड़े गाड़ी पर चलने को विवश है। क्योंकि सड़क कच्चा और पथ बालूनुमा है। पक्के पथ बाढ़ में टूट जाया करती है जिसे चरणबद्ध रूप से मरम्मती करने की जरूरत है।

2. **रेल परिवहनः–** सहरसा जिला पूवोत्तर रेलवे द्वारा देश के सभी भागों से जुड़ा हुआ है। यहाँ बड़ी लाईन और छोटी लाईन दोनों है परन्तु विद्युतीकृत रेल लाईन का पूर्ण अभाव है। नदी जाल के कारण रेलमार्ग का विकास बाधिक हुआ है। धूम–धुमावदार यात्रा, रेलवे प्लेट फार्म का अभाव, रेल पटरी और सड़क की जमीन में काफी उच्चावचीय अन्तर, बालुनूमा ग्रामीण सड़कों की बहुलता देखने को मिलती है। यहाँ पूर्वोत्तर रेलवे के दो मार्ग गुजरती हैः–

   1. गुवाहाटी–सहरसा–कटिहार–पटना रेलमार्ग और
   2. सहरसा–सोनपुर–कटिहार–पूर्णिया रेलमार्ग।

ये दोनों बड़ी रेल लाईन है और शेष लाईनें छोटी हैं।

3. **वायु परिवहनः–** सहरसा, जिला में हवाई अड्डा का निर्माण हुआ है लेकिन वायु सेवा विस्तार का अभाव है। कारण आबादी की माली–हालत दयनीय है। राजनीतिक और प्रशासनिक दृष्टिकोण से वायुमार्ग का उपयोग होता है। आम जनता का इसके विस्तार एवं सेवा सुविधा प्रबन्ध में रूचि का अभाव है।

3. **जल परिवहनः–** सहरसा जिला में कोसी मुख्य परिवहन योग्य नदी है। इसमें नौका का परिचालन आराम से होता है। यात्री आवागमन की सुविधा, सामान की ढुलाई, दूर–दराज के क्षेत्रों तक आराम से की जा सकती है अन्य छोटी–छोटी नदी में भी नाव चलायी जाती है। खासकर मछली मारने के ख्याल से सभी नदी नौकागम्य है। सड़क साधनों का पूल अभाव ग्रस्त होने से नौका ही दोनों तट को जोड़ने का कार्य करती है। बाढ़ क्षेत्र होने से पूल ध्वस्त होता रहता है। जिससे नौका–साधनों का महत्व इस क्षेत्र में सदा बना रहता है। कोसी नाव मछली और कृषि–पशुपालन ही मुख्य पेशा है।

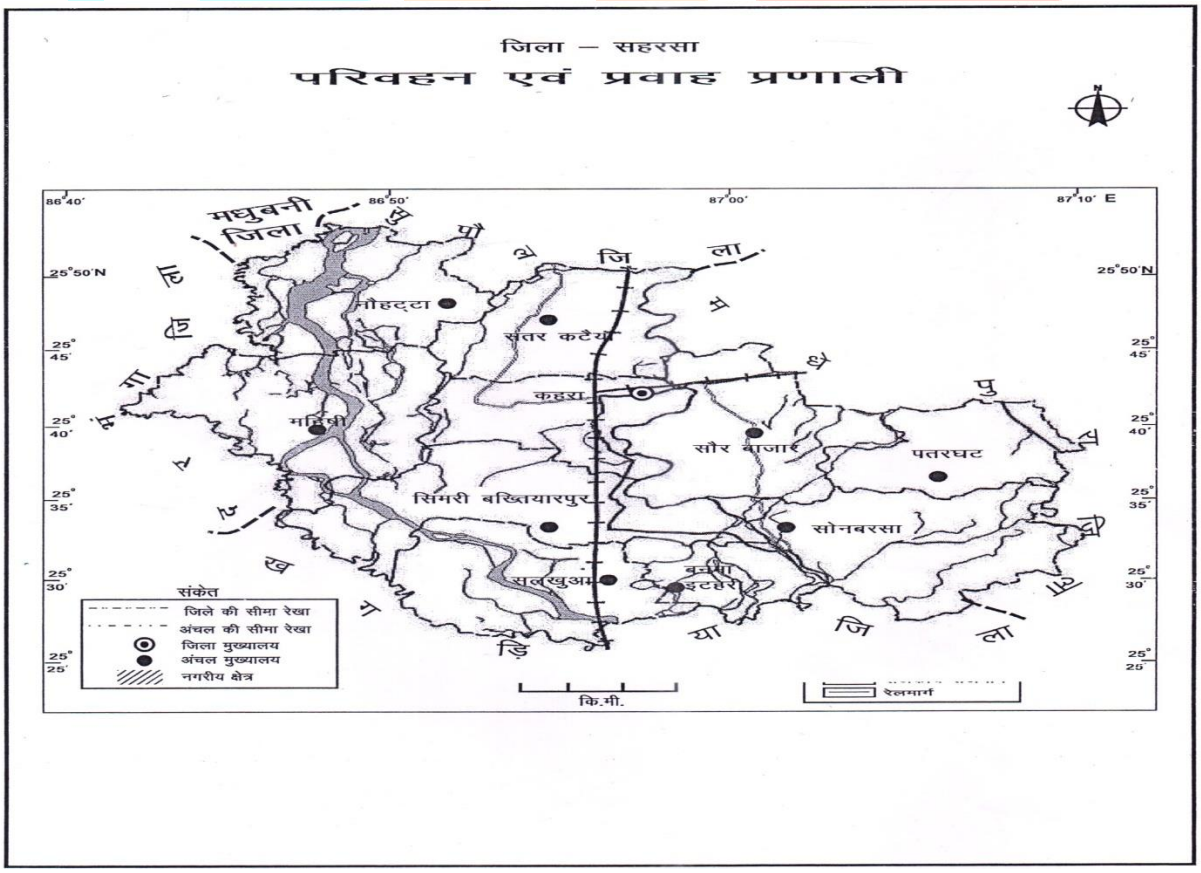

संचार के साधनः–आजकल संचार के साधनों का विस्तार, इन्टरनेंट का जाल सर्वत्र बिछ गया है। डाकतार, दूरभाष, मोबाईल, रेडियों, दूरदर्शन, अखबार, पत्र–पत्रिका, एस0एम0एस0 का जमाना है। पुरानी व्यवस्था लैंडलाइन (भूमिगत तार लाईन) की जगह इन्टरनेट, इनसेट उपग्रह से टाबर के माध्यम से बिना तार टी.बी., रेडियो, मोबाईल सेवाएँ आम जनता को उपलब्ध है। यहाँ प्रति पंचायत 1000 से 5000 की आबादी पर

डाकघर है। जिसमें मनिआर्डर व द्रुत डाक सेवा उपलब्ध है। इस प्रकार सम्पूर्ण सहरसा जिला संचार केन्द्र है। कोई भी गाँव, क्षेत्र, आबादी इसके विकास से अछूता नहीं है। जिसकी खबर दुनिया को न्यूज के माध्यम से हर बक्त मिलता रहता है

संदर्भ सुची

1- Chanderi, M.R. "Power Resourses of India" Culcutta, 1970, Oxford & IBH Publication.

2- Govt. of India, Statistical Abstracts of India, 2007.

3- Government of India (1970), "Irrigation and Power Projects; Ministry of Irrigation and Power.

4- Wadia, M.D.N. (1994) Minerals of India, Delhi, National Book Trust.

5- Husain. M. "Agricultural Geography", New Delhi InterIndia Publication, 1992.

6- Sen, B., The Green Revolution in India A Perspective, New Delhi 1974.

7- Singh, J.Agricultural Geography, New Delhi: Tala McGraw Hill Education, 1984.

8- Bansil, P.C. (1977): Agriculture Problems of India, New Delhi.

9- Shafi, M. (2006) Agricultural Geography, Delhi.

10- Ahluwalia, I (1994): Industrial Growth in India-Stagnation since Mid-60s, Oxford University Press, London.